Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 Impact Factor - 7.139 Indexed (SJIF)

March 2020 Special Issues- 25 Vol. 2

The Current Issues in Social Sciences in India (CISSI-2020)

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Chief Editor
Prof. Dr. B. D. Kokate (I/C Principal)

Dr. S. S. Undare (Vice Principal)
Dr. G. A. Mohite (Vice Principal)

Editor
Dr. R. K. Kale

Co-Editors
Dr. S. N. Akulwar
Dr. B. D. Jadhavar
Dr. S. E. Ghumatkar

Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

March 2020 Special Issue- 25 Vol. 2

The Current Issues in Social Sciences in India (CISSI-2020)

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Chief Editor
Prof. Dr. B. D. Kokate (I/C Principal)

Dr. S. S. Undare (Vice Principal)
Dr. G. A. Mohite (Vice Principal)

Editor
Dr. R. K. Kale

Co-Editors
Dr. S. N. Akulwar
Dr. B. D. Jadhavar
Dr. S. E. Ghumatkar

Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed

Shaurya Publication, Latur

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 25 Vol 2

Title of the issue : - The Current Issues in Social Sciences in India (CISSI-2020)

© All rights reserved with the College & publisher Price : Rs. 400/-

Chief Editor – Arun Godam
Latur

Guest Chief Editor
Prof. Dr. B. D. Kokate (I/C Principal)

Dr. S. S. Undare (Vice Principal)
Dr. G. A. Mohite (Vice Principal)

Editor
Dr. R. K. Kale

Co-Editors
Dr. S. N. Akulwar
Dr. B. D. Jadhavar
Dr. S. E. Ghumatkar

Balbhim Arts, Science & Commerce College, Beed

Published BY
Shaurya Publication
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com , 8149668999

Printed By.
Shaurya Offset
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com

EDITION : March 2020

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 25 , Vol. 2 March 2020 | Peer Reviewed SJIF | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

INDEX

1. भारतीय अर्थव्यवस्था और वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.)एक विश्लेशणात्मक अध्ययन 1
डॉ.संभाजी किसन कदम, डॉ.राजकुमार नागवंशी
2. रामदरष मिश्र और आनंद यादव के उपन्यासों में ग्रामीण राजनीति 9
डॉ. अनिल काळे
3. तब से अब तक...सोशल मीडिया और मानव 14
डॉ. अनिल काळे
4. आंतकवाद कारण और परिणाम 19
प्रा.डॉ.जे.एस.ढवळे
5. भारतीय संविधान आणि कलम ३७० 22
प्रा.डॉ. अविनाश पांचाळ
6. ग्रामीण विकास में सूचना और तकनीक का योगदान 27
डॉ. एस. एस. बिरंगणे
7. उपभोग प्रवत्तीच्यासिध्दाचे विश्लेषणात्मएक अभ्यास 30
प्रा.बोगुलवार ए.एच.
8. वर्धा जिल्ह्यातील कृषी घनतेच्या अभिक्षेत्रीय वितरणाचा अभ्यास 33
प्रा. बुद्धघोष मधुकरराव लोहकरे
9. भारतीय लोकशाही आणि धर्मनिरपेक्षतेचे तत्व : एक चिकित्सक विश्लेषण 37
डॉ.चंद्रशेखर काशिनाथ तळेकर
10. दहशतवाद - एक समस्या 40
चव्हाण छगण फुला
11. "डिजिटल पेमेंट प्रणालीचा अर्थशास्त्रीय अभ्यास" 43
प्रा.डॉ. माणिक चव्हाण
12. महाराष्ट्रातील सहकारी बँकांची दशा व दिशा 48
प्रा. अशोकराव नरसिंगराव चित्ते
13. नागरिकत्व दुरुस्ती कायदा : मुद्दे, वाद आणि वास्तव 53
डॉ. सौ. सुनीता चक्रधर दळवी.
14. जागतिकीकरणानंतर भारतातील शेतकरी आत्महत्या एक आढावा 57
प्रा.नितीन दत्तात्रय दारमोड
15. नागरिकत्व दुरुस्ती कायद्यातील अलिकडील समस्या 61
डॉ. वाल्हेकर दत्तात्रय हरिभाउ
16. भारतीय अर्थव्यवस्थेवर नोंटबंदीचे परिणाम 63
डॉ. ढास डी.के.
17. 'ग्रामीण संयुक्त कुटुंबाचे विघटन – एक समाजशास्त्रीय अभ्यास.' 67
डॉ.दत्ता तंगलवाड
18. कॅशलेश व्यवहारांचे विविध पर्याय व त्यांचे परिणाम 71
भगवान शंकरराव देशमुख

2320-4494 http://generalif.com/jdetails.php?jn

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 25, Vol. 2
March 2020 | Peer Reviewed
SJIF | ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

आंतकवाद कारण और परिणाम

प्रा.डॉ.जे.एस.ढवळे
राजनिती विभाग प्रमुख कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, गढी ता.गेवराई जि.बीड

कवि इकबाल ने बडे गर्व से कहा है, सारे जहॉसे अच्छा हिंदोस्था हमारा, हम बुलबुले है इसकी यह गुलसिता हमारा ....| इसका मतलब यह हुआ की सारे विश्व में मेरे भारत जैसा दुसरा देश शायद ही होगा | परंतु आज यही गुलसिता जैसा देश अनेक समस्याओ से परेशान है, इन समस्याओं के साथ जुझतेहजुझते ना जाने कितने मासुम अपनी जान खो रहे है | आज आबादी, गरिबी, अंधश्रध्दा, कुरितियाँ, पंरपरा, बेरोजगारी के साथहसाथ न जाने कितनी समस्योओ का सामना हम कर रहे है | परंतु आज और एक गंभीर समस्या का सामना हमे करना पड रहा है | जा उपर्युक्त समस्याओं से भी गंभीर परिणाम देनेवाली और करनेवाली समस्या है आंतकवाद | और जो हमे चैन और अमन से रहने नही देती है | हमारे ही नही सारे विश्वभरके साधु संत नेता और आम आदमी भी शांतिके प्रचारक - प्रसारक और समर्थक रहे है, परंतु ऐसी कुछ जा प्रवृत्तीयॉ है, जो आमन और शांति नही चाहती है, अस्थिरता और आंतक के भय का समर्थन कर रही है | इसी कारण आज हम पूर्णरुप से अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहे है |

वैसे तो हमारी धार्मिक मान्यताओं के साथ - साथ व्यक्ति और कानून ही पूर्ण देश में परस्पर सदभाव के माहोल का प्राथमिकता देते है | परंतु ऐसा नही हो रहा है | हमारे संविधान ने ही हमे देश में शांतिपूर्ण जीवन यापन करने के मुलभूत अधिकार दिये है | परंतु इन अधिकारों को भी रौंदा जा रहा है | कानून का डर कम होता जा रहा है | और आंतकवाद और डर का खौफ छायासा हुआ है | हर जगह एक प्रकार की मायुसी सी छा गयी है | इसलिए इसके कारणों का विचार करना अनिवार्य होता है | क्योंकि अगर कारणोंा का पता चले तो परिणाम भी स्पष्ट होंगे और उपाय करना आसान होगा | क्योंकि इस देश का वर्णन हमे जहॉ डाल-डाल पर सोने की चिडियाँ करती है बसेरा, वह भारत देश है मेरा, इन शब्दों में होता था | आज ऐसा क्यो नही यह सोचना, कारण ढुंढना, और परिणामो की गंभीरता को नजर अंदाज न करते हुए उपाय करना हमारा प्रथम कर्तव्य होगा |

इसी कारण हम प्रथम आंतकवाद की परिभाषा समझ लेंगे -

आंतकवाद - आंतकवादी गतिविधीयॉ तत्कालीक असंतोष तथा ईर्ष्या के माध्यम से की जानेवाली हिंसा की तुलना में निजी स्वार्थ, सिध्दी, हेतु, सोच समझकर हिंसा करवाना होता हैं | अर्थात ये निजी स्वार्थ निम्नलिखि्त कारणों पर आधारित होते है |

आतंकवाद के प्रमुख कारण :

1. **धार्मिक संघर्ष :** इस देश का इतिहास देखा जाय तो वह अत्यंत गौरवशाली है | यहॉ के राजा महाराजाओं ने अपनी अपनी आर्थिक मान्यताओं को संभालकर राजकाज पूर्ण किये | कभी किसीने एक दुसरे के धार्मिक मान्यताओं में दखलअंदाजी नही की | इसका उत्तम उदाहरण महाराष्ट्र राज्य के निर्माता छत्रपती शिवाजी महाराज स्वयंम रहे है | परंतु यह भी एक कटु सत्य है, की इस देश में आजतक जीतने भी धार्मिक असंतोष के कारण स्थिती बिगडी थी, उतने अन्य कारण शायद कम होंगे | हम हमारी धार्मिक असंतोष के कारण स्थिती बिगडी थी, उतने अन्य कारण शायद कम होंगे | हम हमारी धार्मिक मान्यताओं का सही अर्थ, धर्म का सही संदेश और सही सिख आत्मसात करे तो आपस मे भाईचारा अपने आप बनेगा क्योकि कोई भी धर्म बडा या छोटा नही होता है | और ना गलत धारणाओं पर टिका हुआ होता है | तो ये आपसी बैर क्यो ? मजहब नही सिखाता आपस मे बैर रखना | इस संदर्भ में अगर हम विचार करे तो धर्म के नाम पर होनेवाले हमले, देवी देवतांओ के अपमान की भावना, धर्म के बहार हुए विवाह आदि के कारण फैल रहे आतंकवाद से हम प्रभावित हो रहे है | और इसमें से कल की पिढी को कोई सही संदेश नही दे पा रहे है |

2. **वंश तथा जातिय संघर्ष :** जाति के बारे मे कहा जाता है की, वह कमी नही जाति | जरा सोचो किसी भी व्यक्ति का किसी वंश, जाति या विशिष्ट परिवार में जनम लेना कोई विशेष नही होता है, क्योंकि कहां जनम ले, यह व्यक्ति के हाथ में नही होता है | परंतु हम इस बात को भूलकर वंश और जाति की श्रेष्ठता - कनिष्ठता के शिकार बनकर एक गलत सोच को लेकर आपसी बैर उठा लेते है | इसके परिणाम आगे चलकर अत्यंत उग्र रुप धारण करते है | क्योंकि हर एक व्यक्ति को अपनी जाति अत्यंत प्रिय होती है | होनी भी चाहिए परंतु यह भावना व्यक्तिक रुप में न रहकर जब उचनिच के रुप में पनपती है, तब वहॉ पर विरोध और उग्रता की भावना निर्माण होने के कारण आपसी बैर वढता है, और

परिणामतः वंश और जाति के आधार पर उग्रवादी संघटन तयार होने लगते है, और परिणामतः एक दुसरे का वर्चस्व सिध्द करने हेतू यह संघटन आंतकवादी रुप धारण करके सत्ता का तिव्र प्रदर्शन करने हेतू आंतकवादी हमले करते है | उद्देश शायद यही होगा अपना अस्थित्व, खौफ और डर कायम करना | इसी कारण तो आये दिन वांशिक और जातीय हमलों की खबरें बढ रही है | इसका एक उदाहरण श्रीलंका में होनेवाले तामिल उग्रवादी, भंडारा, चंद्रपूर जैसे जिले में होने वाले नक्षलवादी संगठन का आंतवाद यह वंश और जातियों के आपसी संघर्ष का ही परिणाम है |

3. **तिव्र प्रादेशिकता :** जैसे किसी वंश या जाति में जनम लेना व्यक्ति के हाथ में नही होता है, उसी प्रकार कौनसे प्रदेश में जनम लेना यह भी व्यक्ति के हाथ में नही है | इसी कारण जिस भूमिपर जनम लिया वहॉं पर पलना, बढना, मातृभूमि की सेवा करना और अपने परिवार के साथ अपने देश का नाम रोशन करना यह हमारा प्रथम कर्तव्य होना चाहिए | लेकीन सोचो ऐसा होता है क्या ? तो उत्तर है नही, क्योंकि इस देश में धर्म, वंश और जाति के नाम पर जितनी अप्रिय घटना आजतक हुई होगी, उतनी ही प्रादेशिकता के नामपर भी दर्ज होगी |

व्यक्ति अपनी अत्यंत तिव्र प्रादेशिकता की भावना के कारण एक इंच जमीन भी किसी को देने के लिए तैयार नही होता है | प्रदेश राज्य, गॉव, बस्ती, मोहल्लो की सिमा रेषा लक्ष्मण रेखा से बढकर महत्त्व रखती है | और परिणामतः एक दुसरे के क्षेत्र में प्रवेश मानो किसी आपत्ती से कम नही होता है | और फिर सुरु होते है आपसी झगडे और वह आगे चलकर उग्रवादी और अलगाववाद कों जन्म देते है | और फिर शुरु होता है, आपसी बैर, तोडफोड, जान लेवा अलगाववाद हमले | परंतु यह कोई भी सोचने की मानसिकता नही रखता की, इससे क्या लाभ होगा | जनजीवन पर क्या असर होगा इसका तो अनेक उदाहरणों तो आज भी हम सभ अनुभव करते है और वह है, भारत-पाकिस्तान का सीमावाद | स्वतंत्रता प्राप्ती के इतने सालोंबाद भी इसका कोई भी समाधान प्राप्त नही हुआ है, न जाने आज तक कितने शहीद हुये और आगे चलकर भी होंगे और इसका कारण भी यही है अत्यंत तिव्र प्रादेशिकता | महाराष्ट्र का दुसरा उदाहरण दे सकते है और वह है, महाराष्ट्र, कर्नाटक सिमावाद पिछले दिनों में बेलगॉव स्थित हमले ने सारे राज्य को इस भावना पर सोचने के लिए प्रवृत्त किया की क्या वह तिव्र भावना मानव के लिए कल्याणकारी होगी ? अगर नही तो हमी क्यो ऐसी कृति करते है |

4. **भाषावाद :** भाषा यह मनुष्य मात्र को प्रकृति से मिली एक महत्त्वपूर्ण देन है | जिसके कारण मनुष्य और प्राणियों के दरम्यान का अंतर स्पष्ट होता है | साथ ही में भाषा यह भावाभिव्यक्ति का प्रभावि माध्यम है | इसका उपयोग ज्ञान, संवाद आपसी बोलचार और शांततापूर्ण वातावरण बनाने के लिए होना आवश्यक है | परंतु स्थिती इसके अत्यंत विपरित दिखाई देती है | और इसका प्रमाण है, स्वातंत्रता प्राप्त के बाद भी इस देश को एक राष्ट्रभाषा का प्राप्त न होना | हिंदी की राष्ट्रभाषा के रुप में घोषणा होने पर भी आज देशांतर्गत ही हिंदी का विरोध दिखाई देता है | और यह विरोध यहा तक तिव्र है की, अंग्रेजी और उर्दु को राष्ट्रभाषा के रुप में हम स्विकार करना चाहते है |

परंतु हम यह क्यों भूलते है की, किसी भी देश के राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत के समान राष्ट्रभाषा गौरव के प्रतिक होते है, राष्ट्रभाषा की पहचान होती है | और उसका अधिकाधिक प्रयोग करनेवाले की उस देश के नागरीक के रुप में पेहचान होती है | हम इन सब बातो को भूलकर हिंदी भाषा का विरोध कर रहे है | दक्षिण की और के राज्य हिंदी का स्विकार न करके आपसी मनमुटाव बढा रहे है |अगर हमे आपसी संघर्ष कम करने है तो हमे स्वामी विवेकानंदजीने बरसों पहले अपने भाषण की सुरुवात भाई और बहनों से की थी, हमारे विद्यमान पंतप्रधान मा.नरेंद्र मोदीजी ने अमेरिका में अपना भाषण हिंदी में दिया इसे याद करना होगा |क्योंकि आखिर में भाषा तो आपसी मेलजोल का साधन है |भाषा में प्रयुक्त शब्द ही तो जोडते और तोडते है |

5. **बढती जनसंख्या :** यह आज आतंकवाद का एक प्रमुख्या कारण बनता जा रहा है | क्योंकि हर एक की अपनी एक सीमा होती है | चाहे वह धरती की बोझ उठाने की क्षमता हो या उपजाऊ होने की क्षमता | जब इन पर बोझ बढ जाये तो स्पष्ट है, संघर्ष होगा ही | क्योंकि अगर हम एक साथ रहते भी होंगे परंतु विचार और प्रवृत्तियॉ अलग-अलग है | हर एक की सोच अलग है | आज यह बढती जनसंख्या के कारण जीवनाश्यक चिजों का अभाव निर्माण होना स्वाभाविक है, परंतू हम इसे नियंत्रित करने के बजाय सहजता से सभी सुविधाये प्राप्त करने की मंशा रखते है | और जब यह असंभव दिखाई देता है, तब भावनिक रुप से नकारात्मकता को स्विकार करते हुए, विरोधी गतिविधियो के शिकार बनकर उग्ररुप धारण कर लेते है | आसानीसे नही मिला तो छिनकर लो की भावना प्रबल होने के कारण बढती आबादी आज आतंकवाद का कारण बन गयी है | बढती आबादी ने सभी प्राथमिक सुविधाओं को प्रभावित किया है | परिणामतः आज अपनी प्राथमिक आवश्यकता पूर्ण करने के लिए भी शस्त्र उठाने की नौबत आयी है | साथ ही में जरुरते पूर्ती में होने वाली परस्परावलंबित्व भी अराजकता और आतंकवाद बढा रही है |

6. **आर्थिक असमानता :** बढती आबादी आर्थिक असमानता को जन्म देती है, क्योंकि बढती आबादी, रोजगार पूर्ती के साधनों की बुरी तरह प्रभावित करती है | हर एक को शिक्षा और नौकरी मिलना मुश्किल बनता है | और गरीब अधिकाधिक गरीब बनते जाते है | इन दोनो वर्गो के दरम्यान फासले अधिकाधिक बढ जाते है | एक दुसरे के प्रती विषमता की भावना पनपने लगती है | और यह विषमता इतनी बढती है की, अंत में

..dao chavan yanchi seemaprashna bhumika | Power of knowledge | March 2022 | 2320-4494 | http://generalif.com/jdetails.php?name=Power%20of%20Knowledge

Special Issue 25 , Vol. 2 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
March 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

आर्थिक विषमता से पिडीत वर्ग उग्रवादी विचार धारण करते है | और इन विचारों के अमिरोंपर आतंकवाडी हमले करके अपने विचारों को पूर्ण करते है |

साथ ही में बडे बडे उद्योग समूह को प्रभावित करना, उनको हानी पहुचॉना, उनके परिवार जनों को अगवा करना, फिरौती मागना, देने न देने पर हत्या करना आदि जैसी अप्रिय घटनाओं के रुपमें आतंकवाद का भयानक चेहरा हमारे सामने आता है | इसी कारण जो मिले उसमें खुश होने की तुलना में अधिकाधिक की अपेक्षा ये दिल मांगे मोर की पूर्ती के लिए आतंवाद का सहारा लिया जाता है |

7. **राजनैतिक कारण :** सत्ता प्राप्त और सत्ता प्राप्ती के लिए सत्ता संघर्ष, यह मानव की प्रवृत्ती रही है | आज सारे विश्व में जानलेवा सत्ता संघर्ष दिखाई देता है | किसी भी देश, देशांतर्गत राज्यों में आपसी भाईचारे का अभाव है | चैन और आमन का महत्त्व नही है, सिर्फ सबकुछ के लिये हर एक

प्रयत्नशिल होने के कारण राजनिती भी इससे पिडीत है | अपना रौब जमाये रखने के लिए राजनितिज्ञ अनेक समर्थको को संभाले रखते है | और जैसे ही कही पर इनकी सत्ता को हानी की आक्षांका हो, वहा पर लाठियाँ बरसने लगती है | बम हमले होने लगते है, साथ में लुटमार, आग का प्रकोप होने लगता है | यह सब सत्ता कायम करने के लिए किया जाता है | और आज ऐसी स्थिती हमारे ही देश के अनेक राज्यों में भी दिखाई देती है | समर्थको की मुठभेड तो आये दिन होती ही रहती है | और ऐसा करने के लिए सामान्य जनता को उकसाया जाता है, यह जनता समझती नही है | साथ में एक मत प्रवाह यह भी है की, अपनी सत्ता, रौब और खौफ कायम करने के लिए राजनिती में अनेक प्रकार के आतंकवादी संगठनों को संभाला जाता है | उन्हे पैसे, शस्त्र, अनाज और आवश्यक वस्तुओं की पूर्ती की जाती है | और फिर आवश्यकतानुरुप इनका उपयोग सत्ता प्राप्ती में किया जाता है |

ऐसे और ऐसे अनेक कारण है जो आज आतंकवाद को बढा रहे है, इसमे उच्च बेरोजगारी अंधश्रध्दाओं के समर्थक, शिक्षा का अभाव, निरक्षरता, व्यक्ति प्रभाव से पिडीत वर्ग, सामाजिक दृष्टी से पिछडे वर्ग, आधुनिक तंत्रज्ञान प्राप्त अत्यंत उच्च शिक्षा-विभुषित लोग जो मिडिया , नेट, सायबर संबंधित जानकारी रखते हो, मूल्यों तथा संस्कारों का अभाव अधिक की चाह, संतोष की तुलना में असंतोष का प्रभाव , आंतकवादी प्रवृत्ती को बढावा देनेवाली फिल्में कुल मिलाकर यह सूची और बढ सकती है |

परंतु आपसी भाईचारा, अमन और विश्व शांति की कामना करनेवाले हम आज आंतकवाद से प्रभावित है | इसके परिणाम हमे काई लाभ नही देते क्योंकि मार काट, लुटपाट, हमलो आदि का परिणाम अप्रिय ही होगा | इसके बारे में सोचने का समय मानो निकला जा रहा है, परंतु सिर्फ सोचना कर हमे नही रुकना प्रत्यक्ष रुप से कृती करने का समय आज देहलिजपर खडा है, अगर फिर भी हमने ध्यान नही दिया तो हमे देर से आये दुरस्त आयें कहने का भी अधिकार प्राप्त नही होगा | और यह हमारी पहचान भी तो नही है क्योंकि हमारी पहचार तो इस प्रकार की है,

आओ बच्चो तुम्हे दिखाऊँ झॉकी हिंदूस्थान की
इस मिट्टी से तिलक करो
यह धरती बलिदान की
वंदे मातरम् वंदे मातरम्

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. प्रा.उदगावकर, दहशतवाद, प्रमोद प्रकाशन, 1990.
2. वैद्यमागो , काश्मिर समस्या और समाधान, लाखे पब्लिशर्स, नागपूर,1991.
3. रायपूरकर वसंत, स्मारणिका लेख राजनितीशास्त्र, प्राध्यापक परिषद, 2002.
4. पेडसे अरुणा, राजकीय दहशतवाद,1984.